Research Article | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 9 | September 2025

सन्त निरंकारी मिशन और महिलाओं पर इसके प्रभावः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

ललिता कश्यप[1], प्रोफेसर हेमेन्द्र सिंह[2]

[1] शोधार्थी के.जी.के. कॉलेज मुरादाबाद, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविधालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

[2] शोध पर्यवेक्षक, समाजशास्त्र विभाग के.जी.के. कॉलेज मुरादाबाद, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविधालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

ABSTRACT

अब तक हुये धार्मिक आंदोलन का महिलाओं की प्रस्थिति पर होने वाले प्रभाव के क्रम में निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं की प्रस्थिति में परिवर्तन के अध्ययन पर यह शोध पत्र आधारित है। ब्रहम समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, नारीवादी आंदोलन इत्यादि आंदोलन महिलाओं को सशक्त करने के प्रयास से किये गये हैं किन्तु अभी भी महिलाओं की प्रस्थिति में अपेक्षाकृत परिवर्तन नहीं हुआ है।

एस कुजूर, आशा कौशिक, डी. एस. बघेल समाजशास्त्रीयों के अनुसार वर्तमान में भी महिलाओं को शारीरिक हिंसा, मानसिक हिंसा प्रताडना, इत्यादि अपराधों को सामना करना पड रहा है आमतौर पर घरों में, कार्यालयों में महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार देखने को मिलता ही रहता है। समाज में सभी को गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार है किन्तु महिलायें अभी भी कहीं न कहीं अभाव में ही जीवन व्यतीत कर रहीं हैं। समाज सुधार आंदोलनों का सकारात्मक प्रभाव उच्च वर्ग की महिलाओं की प्रस्थिति पर तो देखा गया है, किन्तु मध्यम व निम्न वर्ग की महिलाओं की प्रस्थिति अपेक्षाकृत निम्नतर देखने को मिलती है।

जौली सुरजीत कौर, सिद्वार्थ रंजन, कविता रानी, द्वारा निरंकारी मिशन पर लिखे गये शोध ग्रंथ को दृष्टिगत करने के उपरांत तथा निरंकारियों द्वारा आयेजित सभाओं (सत्संग) में जाने तथा निरंकारी महिलाओं से वार्तालाप से प्रतीत होता है कि निरंकारी महिलाओं की प्रस्थिति में व्यापक सुधार हो रहा है। जिससे यह पता चलता है कि निरंकारियों में महिलाओं के प्रति कितना आदर एवं सम्मान है साथ ही यह भी कि निरंकारी संसार में महिलाओं को कितना उच्च स्थान प्राप्त है।

अब मेरा उद्देश्य यह है कि रामपुर जिले की 300 निरंकारी महिलाओं पर विस्तृत अध्ययन करूँ जिससे जो अध्ययन मैंने किया है वो स्थापित हो सके और महिलाओं की वर्तमान प्रस्थिति के संदर्भ में निष्कर्ष प्राप्त हो सके।

KEYWORDS: निरंकारी, महिलाओं की प्रस्थिति, धार्मिक आंदोलन

भूमिका

भारत में महिलाओं की सुरक्षा तथा उनके अधिकारों से संबंधित अनेक आंदोलन हुये हैं। धार्मिक कर्मकाण्ड के कारण महिलाओं को अनेक कुरीतियों का सामना करना पड़ा। समय–समय पर अनेक समाज सुधारकों ने आंदोलनों के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति सचेत किया है। जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने अनेक अधिनियम समय–समय पर महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये बनाये।

सर्वप्रथम हिंदू समाज में व्याप्त कुरीतियों जो विशेषकर महिलाओं से संबंधित थीं, इसके लिये राजाराम मोहन राय ने ब्रहम समाज (1828) की स्थापना की, जिससे महिलाओं को सती प्रथा से निजात मिली।1867 ई. में आत्मारंग पांडुरंग द्वारा प्रार्थना समाज का उदय हुआ, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं को विधवा पुर्नविवाह अतंरजातीय विवाह, पुरूषों एवं स्त्रियों की विवाह की आयु को बढाना, स्त्री शिक्षा को बढावा देना, स्वामी दयानंद सरस्वती के द्वारा आर्य समाज की स्थापना 1875 बम्बई में की गई, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं को जाति व्यवस्था में व्याप्त अस्पृश्यता के घोर कलंक से मुक्ति मिली, भारतीय संविधान में भी मौलिक अधिकारों में अनुच्छेद 17 जोडकर अस्पृश्यता का अंत किया गया। 1875 इ. में थियोसोफिकल सोसाइटी का गठन मैडम ब्लावत्सकी एक अमेरिकी अफसर एमएस ओलकॉट के द्वारा किया गया, इत्यादि आंदोलन द्वारा महिलाओं की स्थिति को सुधारा गया। सिक्ख धर्म में भी सुधार आंदोलनों का विकास हुआ, जिसका नेतृत्व बाबा दयाल दास द्वारा किया गया, इसी क्रम में नामधारी पंथ की स्थापना बाबा राम सिंह द्वारा (1816) में की गयी। क्रमशः निरंकारी आंदोलन का विकास हुआ जिसका क्रम बाबा गुरूदयाल से शुरू हुआ। बाबा बूटा सिंह द्वारा निरंकारी मिशन का स्थापना दिवस 25 मई 1929 से शुरू हुआ माना जाता है। वर्तमान में निरंकारी मिशन जो एक समाज सुधार आंदोलन है, 6वीं गुरू सत्गुरू माता सुदीक्षा जी महाराज के सानिध्य में चल रहा है।

संकल्पनात्मक शब्दों की व्याख्या

निरंकारी– यह सिख धर्म का एक संप्रदाय है, पंजाब में बाबा दयाल दास द्वारा स्थापित सिख धर्म में एक सुधार आंदोलन था वर्तमान में

समस्त धर्म के, समस्त जातियों के व्यक्ति इस आंदोलन से जुडे हैं इसके अनुयायियों को निरंकारी कहा जाता है। वर्तमान में इस मिशन का संचालन सदगुरू माता सुदीक्षा जी महाराज के द्वारा किया जा रहा है। इनके द्वारा आयोजित सत्संग में जो व्यक्ति जाते हैं, निरंकारी कहलाते हैं।

महिलाओं की प्रस्थितिः निरंकारी आंदोलन से जुडी महिलायें अपना जीवन कैसे व्यतीत कर रही हैं।

धार्मिक आंदोलनः इसका तात्पर्य उन आंदोलनों से है जो धार्मिक कुरीतियों में सुधार के लिये उत्तरदायी है एवं जिन्हें विधि एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा निरंतर संसोधन के पश्चात सामाजिक सदभाव समानता एवं तार्किकता पर आधारित किया गया है

अध्ययन के उद्‌दश्य

प्रस्तुत रूपरेखा में भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण पर हुये सामाजिक धार्मिक आंदोलनों पर ध्यान आकर्षित किया गया है। महिलाओं की स्थिति वैदिक काल के बाद से ही निम्न होने लगी थी इसके लिये अनेक आंदोलन चलाये गये और स्त्रियों को रूढियों से मुक्त भी कराया गया वर्तमान में निरंकारी आंदोलन में महिलाओं की दिशा तथा दशा कैसी है ज्ञात करना ही इस शोध पत्र का उद्‌देश्य है।

अध्ययन के स्त्रोत

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री प्राथमिक तथा द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है जो विभिन्न लेखकों के पुस्तक, पत्र–पत्रिकाओं तथा साक्षात्कार, अवलोकन पद्धति पर आधारित है।

अध्ययन से संबंधित साहित्यिक समीक्षा

वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय नहीं थी, कन्याओं को संगीत, नृत्य, बुनाई आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था। साथ ही साथ उपनयन संस्कार तथा वेदों को पढने का अधिकार था।

वैदिक काल में विदुषी स्त्रियों का अभाव नहीं था, अपाला आत्रेयी, कश्यप की शिखंडिनी नामक दो पुत्रियाँ उर्वशी इत्यादि। वे कहतीं हैं कि अर्थववेद से स्त्रियों की गरिमा में कमी आने लगी। (एस कुजूर 1972)

धार्मिक प्रभाव के कारण मानव गलत मान्यताओं को भी स्वीकार कर लेता है, शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक पवित्रता के लिये अनेक कर्मकांड किये जाते हैं, धार्मिक प्रभाव के कारण अनुचित कार्यों को भी कर दिया जाता है, जिसका प्रभाव महिलाओं पर अधिक देखने को मिलता है चाहे वह नकारात्मक ही क्यों न हो धर्म के नाम पर ही सुधार किये जाते हैं और धर्म के नाम पर ही अत्याचार भी किये जाते हैं। (रवींद्रनाथ मुखर्जी, देवाशीष दुबे 1992)

सन्त कबीरदास का नाम समाज सुधारकों में आता है, किंतु वे स्त्री को साधना में बाधक मानते थे। वहीं गुरूनानक ने नारियों को सम्मान दिया, यही कारण है कि सिक्ख सम्प्रदाय में नारी तथा शूद्र व्यापक संख्या में जुडे। सिक्ख गुरू विशेषकर गुरू गोविंद सिंह ने मुगलकाल में भारतीय नारियों को एक गौरवपूर्ण जीवन यापन करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। (आशा कौशिक 2004)

जो महिलायें संभ्रात परिवार से संबंधित थीं वो तो पुरूषों के सहयोग से सक्रिय नेतृत्व करतीं थीं। उच्च वर्ग की महिलायें तो अपना स्थान कहीं न कहीं बना ही लेतीं थीं, किंतु दलित मुसलमान आदि आंदोलनों की महिलायें मुख्यधारा से अदृश्य रहीं। महात्मा ज्योतिबा फुले पंडिता रामाबाई जैसे कुछ समाज सुधारकों को छोडकर सबने जाति प्रथा तथा रूढियों का समर्थन ही किया है। उच्च जाति की महिलाओं पर गहरा प्रभाव पडा निम्न जाति की महिलाओं पर नहीं। अपनी आयु से 3 या 4 गुना बडे आयु वाले शिक्षित पतियों को खुश करने के लिये महिलाओं ने शिक्षा ग्रहण की। (जोशी गोपा 2011)

विदेशी शिक्षा के प्रचार प्रसार ने हमारे रीति–रिवाज को तार्किकता की तरफ मोडा जिससे आवश्यक सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन निकलकर सामने आये, जिससे भारत की महिलाओं को एक नई दिशा मिली, इन्होंने आलोचनात्मक परीक्षण किया है, समकालीन स्थिति में तो भारतीय सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई किंतु इसके दीर्घकालीन परिणाम भी देखने को मिले। महिलायें चार दीवारी तक ही सीमित रहीं। (अजीत सिंह चौधरी, वीरेंद्र सिंह चौधरी 2015)

स्त्रियों की प्राचीनकाल में तो थोडी सही दशा थी किंतु वर्तमान में यह दशा बिगडती जा रही है, हमारा समाज पितृसत्तात्मक समाज है और महिला को आज भी पुरूष से कमतर ही समझा जाता है। महिलाओं को शारीरिक हिंसा, मानसिक हिंसा, प्रताड़ना इत्यादि अपराधों का सामना करना होता है (डी.एस.बघेल 2019)

दो आधार स्तंभ अर्थात स्त्री एवं पुरूष मिलकर समाज में योगदान दें इससे ही निरंतर विकास संभव है। यधपि भारत में महिलाओं को देवी की मान्यता दी गई है। किंतु कालांतर में उनके कार्य योगदान और उनकी प्रतिष्ठा को समाज की मुख्य धारा से दूर कर दिया गया है। महिलाओं को पंचायत में कार्य करने का सुनहरा अवसर दिया गया है, किंतु उसमें भी जीत की हकदार होने पर भी उनके पति द्वारा ही कार्य किये जाते हैं, ताकि वो चारदीवारी तक ही कैद रहे। (परविन्द्रजीत सिंह 2022)

भारत में महिलाओं के आंदोलनों संबंधित शोध आधारित लेखन अपेक्षाकृत कम हैं। पुरूष वर्चस्व (प्रभुत्व) के प्रति महिलाओं का प्रतिरोध पश्चिमी शिक्षा की ही उपज है। परिवार जाति धर्म से परे महिलाओं को एक नई पहचान मिलनी चाहिये। अगर सांस्कृतिक परम्पराओं का विरोध करना पढे तो भी उचित होगा बस महिलाओं की गरिमा पर आँच न आये। स्त्रियों से आशा की गई कि वे घर की चारदीवारी के बाहर अपने पति को सहायता देने के लिये कार्य करें, किंतु एक मानव प्राणी के रूप में अपने सम्मान के विकास के लिये सर ऊँचा न करें, ऐसे महिला संगठन एक ऐसी विचारधारा के प्रसार के साधन बन गये जो स्त्रियों को निम्न भूमिका प्रदान करते हैं। (घनश्याम शाह 2023)

दा निरंकारी एण्ड नामधारी मूवमेंट्स इन पंजाब डयुरिंग दा नाइनटीथ सेन्चुयरी यह अध्ययन पंजाब में किया गया है। इसका उद्देश्य निरंकारियों तथा नामधारियों के मध्य जो अन्तर है उसको जानने का प्रयास किया गया है इसकी खोज में निरंकारी तथा नामधारी दोनों ही धार्मिक सिक्ख सुधार आंदोलन हैं, जहाँ नामधारी सिक्खों के आदि गुरूओं की वाणी को मानते हैं वहीं निरंकारी बाबा अवतार सिंह जी के फरमानों पर चलते हैं तथा निरंकार की उपासना किया करते हैं। नामधारी जहाँ केवल सिक्ख संप्रदाय से संबंधित हैं वहीं निरंकारी मिशन में किसी भी धर्म, मजहब, जाति के व्यक्ति आ सकते हैं। (जौली सुरजीत कौर 2000)

निरंकारी संप्रदाय मूलतः एक आध्यात्मिक संप्रदाय है। इस संप्रदाय के साधु (सन्त) उन सभी सामाजिक कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं जिससे सामाजिक प्रगति होती है, ये लोग पोलियो ड्रॉप्स वितरण, रक्तदान शिविर, नेत्र शिविर तथा स्वास्थ्य शिविर आदि में स्वतः स्वंयसेवक के रूप में समाज सेवा के भाव से योगदान करते हैं। नारी के प्रति इनके मन में श्रद्धा का भाव है। ये लोग नारी को पुरूष के समकक्ष स्थान दिलाने की दिशा में लगातार प्रयास कर रहे हैं तथा ये सफल भी हो रहे हैं। (रंजन सिद्धार्थ 2010)

निरंकारी मिशन का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है मिशन समाज में अनेक योगदान दे रहा है, इसके अनुयायियों में अथाह प्रेम है समाज तथा मिशन दोनों ही जगह निरंकारी प्यार, प्रीत के साथ रहते हैं। आत्मा को ईश्वरीय अनुभूति, परमात्मा की जानकारी, अज्ञान के अंधेरे से प्रकाश की ओर जाने का रास्ता मिशन द्वारा दिखाया जाता है। आध्यात्मिकता की तरफ मानव को मोड़ा गया है। (रानी कविता 2022)

अब मेरा यह उद्देश्य है कि रामपुर जिले की 300 महिलाओं का विस्तृत अध्ययन करूँ जिससे जो अध्ययन मैंने किया है वो स्थापित हो सके और निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं की प्रस्थिति के संदर्भ में निष्कर्ष प्राप्त हो सकें। अब तक 60 महिलाओं से वार्तालाप हुई है। जिसका विवरण निम्न है।

निरंकारी आंदोलन से संलग्नित होने का कारण

क्रम सं.	कारण	संख्या	प्रतिशत
1	शारीरिक परेशानी	04	6.67 प्रतिशत
2	अदृश्य शक्तियों द्वारा परेशानी	06	10 प्रतिशत
3	ईश्वरीय अनुभूति	03	5 प्रतिशत
4	निरंकारी अनुयायियों के व्यवहार से प्रेरित	15	25 प्रतिशत
5	जन्म निरंकारी परिवार में	18	30 प्रतिशत
6	विवाह निरंकारी परिवार में	14	23.33 प्रतिशत
	कुल	60	100 प्रतिशत

निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं का शिक्षा वर्ग

क्रम सं.	शिक्षा वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	04	6.67 प्रतिशत
2	प्राथमिक शिक्षा (1 से 5 वीं)	06	10 प्रतिशत
3	(10जी) दसवीं पास 6 से 10)	03	15 प्रतिशत
4	(12जी) बारहवीं पास (11–12)	10	16.67 प्रतिशत
5	स्नातक	06	10 प्रतिशत
6	परास्नातक	14	23.33 प्रतिशत
7	परास्नातक से ऊपर	00	0 प्रतिशत
	कुल	60	100 प्रतिशत

निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं के व्यवसाय/ कामकाज

क्रम सं	व्यवसाय / कामकाज	संख्या	प्रतिशत
1	सेवारत	24	40 प्रतिशत
2	गृहणी	36	60 प्रतिशत
3	सेवानिवृत्त	00	0 प्रतिशत
	कुल	60	100 प्रतिशत

निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं में आंदोलन से जुड़ने के लिये निरंकारी परिवार में जन्म (30 प्रतिशत) तथा निरंकारी परिवार में विवाह (23.33 प्रतिशत) के अलावा अन्य कारण भी जैसे अनुयायियों के सामाजिक व्यवहार से प्रेरित होकर, शारीरिक परेशानी तथा अदृश्य शक्तियों के भय से मुक्ति तथा ईश्वरीय अनुभूति जैसे अनेक कारण देखने को मिले।

निरंकारी महिलाओं में शिक्षा का स्तर अत्यधिक उच्च देखने को मिला परास्नातक 23.33 प्रतिशत तथा अशिक्षित महिलाओं की संख्या 21.67 प्रतिशत देखने को मिली। उच्च शिक्षा स्तर होने के बाद भी सेवारत महिलायें 40 प्रतिशत ही हैं तथा बाकी गृहणी हैं, मेरा अभी तक किसी सेवानिवृत्त महिला से परिचय नहीं हुआ है। अभी 240 महिलाओं से परिचय होना शेष है ताकि, निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं की प्रस्थिति में हुये परिवर्तन के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से यह ज्ञात किया गया है, कि प्रत्येक सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों द्वारा महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार हुआ है और क्रमशः निरंकारी महिलाओं से साक्षात्कार करने पर ज्ञात हुआ कि निरंकारी जगत में महिलाओं को पुरूषों के समान दर्जा दिया गया है तथा प्रत्येक कार्य में महिला भी संपूर्ण रूप से जिम्मेदारी निभाती हैं। महिलाओं प्रस्थिति में सुधार के लिये सप्ताह में एक दिन महिला संत्सग के नाम से निर्धारित किया गया है, जिसकी संपूर्ण नेतृत्व महिला द्वारा ही किया जाता है अवलोकन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि महिलाओं की संख्या सत्संग में अमूमन पुरूषों से ज्यादा ही होती

है। सभी प्रकार की रूढिवादिताओं से महिलाओं को मुक्त रखा गया है, तथा पुरूषों के समकक्ष ही स्थान प्रदान किया गया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि निरंकारी जगत की महिलाओं की प्रस्थिति में व्यापक सुधार हुआ है, महिलायें निर्णय लेने नेतृत्व करने समान अधिकार प्राप्त करने जैसे इत्यादि कार्यों में निरंकारी मिशन की महिलाओं द्वारा अच्छा जीवन व्यतीत किया जा रहा है, और निरंकारी मिशन महिलाओं की दिशा तथा दशा सही करने में प्रयासरत है।

संदर्भ

1. कुजूर,एस (1972) वैदिक एवं धर्म शास्त्रीय साहित्य में नारी 71.75 प्रथम संस्करण प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक,वाराणसी मुद्रक, ज्योतिष प्रकाश प्रेस, वाराणसी
2. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ दुबे, देवाशीष (1992) भारत में धर्म और समाज प्रैसीडैण्ट प्रेस मेरठ कैण्ट
3. कौशिक, आशा (2004) नारी सशक्तिकरण प्रथम संस्करण व्यास बिल्डिंग एस.एस.एस. हाईवे जयपुर, मुद्रक शीतल प्रिंटर्स (जयपुर) PP-48.50
4. जोशी, गोपा (2011) संशोधित संस्करण भारत में स्त्री असमानता (हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय) 10 केवेलरी लाइन दिल्ली 1007 द्वारा प्रकाशित।
5. सिंह, चौधरी अजीत, सिंह, चौधरी वीरेंद्र (2015):— औपनिवेशिक भारत में सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनः एवं अध्ययन (AIJRA Vol II Issue III) पेज नं (25.1-25.8)
6. बघेल,डी0 एस (2019) अपराधशास्त्र महिलाओं के विरूद्ध अपराध कैलाश पुस्तक सदन भोपाल
7. सिंह, परविन्द्रजीत (2022) महिला सशक्तिकरण का समाजशास्त्री अध्ययन (संत श्री प्राणनाथ परनामी पीजी कॉलेज पदमपुर)
8. शाह, घनश्याम (2023) भारत में सामाजिक आंदोलन संबंधित साहित्य की एक समीक्षा, रावत, पब्लिकेशन जवाहर नगर जयपुर
9. KAUR JOLLY SURJIT (2000) Sikh Revivalist Movements the Nirankari and Namdhari Movements in moments in Punjab in the Nineteenth century (A Social Religious study) Gyan publishing Housel New Delhi- 110002
10. रंजन, सिद्धार्थ (2010) वाराणसी के निरंकारी पंथियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय)
11. RANI KAVITA (2022) Sant Nirankari Mission And Its Impact On Society A Sociological Study, आरती पब्लिशिंग हाउस एण्ड डिस्टीब्यूटर्स